Lec-13

Smt. Shanta Singh
Dept of LSW
SNSRKS College, Saharsa

Aspects of Industrial Relations

औद्योगिक सम्बन्ध के पहलू

आधुनिक औद्योगिक समाज में औद्योगिक सम्बन्ध के दो पहलू होते हैं —

(i) सहयोग (co-operation) के पहलू
(ii) संघर्ष (Conflicts) के पहलू

(i) सहयोग (co-operation) औद्योगिक उत्पादन श्रम एवं पूँजी के सहयोग का प्रतिफल है। अर्थात् किसी भी उद्योगों का सफल संचालन श्रमिकों एवं नियोजकों के आपसी सहयोग पर निर्भर करता है। आधुनिक उद्योगों का सफल संचालन एवं औद्योगीकरण के विकास की मुख्य आवश्यकताएँ श्रम प्रबंध सहयोग है। श्रम प्रबंध सहयोग के बिना किसी भी उद्योग या संगठन के सफल संचालन की कल्पना नहीं की जा सकती। सहयोग के पहलू में दोनों पक्षों के हित निहित होते हैं। उत्पादन होते रहने से नियोजकों को मुनाफा होता है तो दूसरी ओर श्रमिकों को मजदूरी एवं अन्य सुविधाएँ मिलती रहती हैं। यदि उत्पादन के कार्य बन्द हो जाएँ तो, इससे नियोजकों और श्रमिकों दोनों को ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। इसी कारण से उद्योग में नियोजक और श्रमिक दोनों एक दूसरे के साथ सहयोग करते रहते हैं ताकि उत्पादन निर्बाध गति से चलता रहे तथा दोनों के आर्थिक हितों की पूर्ति

होती रहे। भारतवर्ष में दोनों पक्षों के बीच सहयोग को प्रोत्साहन देने हेतु कई प्रकार की संस्थाओं का विकास किया गया है, जो निम्न हैं —

संयुक्त प्रबंध परिषद (Joint management council), प्रतिष्ठान परिषद (shop council), संयुक्त उत्पादन समिति (Joint production committee), कैंटीन समिति (Canteen committee), सुरक्षा समिति (Safety committee) इत्यादि। भारतीय श्रम सम्मेलन (Indian labour conference), स्थायी श्रम समिति (standing labour committee), राज्य श्रम सलाहकार बोर्ड (State labour advisory board) तथा औद्योगिक समिति (Industrial committee) जैसी त्रिपक्षीय संस्थाएँ भी श्रम प्रबन्ध सहयोग में सक्रिय हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नियोजकों और श्रमिकों के बीच सहयोग के बिना कोई उद्योग नहीं चल सकता। लेकिन सहयोग के इस व्यापक एवं अनिवार्य तत्व के साथ-साथ औद्योगिक संबंध में नियोजकों और श्रमिकों के हितों में विरोध के कारण संघर्ष के तत्व भी विद्यमान रहते हैं।

(2) <u>संघर्ष (conflict)</u> औद्योगिक संबंध का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू संघर्ष का अस्तित्व है। सहयोग के

समान ही संघर्ष भी औद्योगिक संबंध में अन्तर्निहित (inherent) होता है। जब औद्योगिक विवाद के रूप में हड़ताल एवं तालाबन्दी का जन्म होता है, तब संघर्ष के पहलू सामने आते हैं। औद्योगिक अशान्ति, बारंबार हड़ताल एवं तालाबन्दी के रूप में काम बन्दी, धीमी गति से उत्पादन इत्यादि श्रम एवं प्रबन्ध के बीच अन्तर्निहित संघर्ष का सूचक है। संघर्ष कई विषयों पर हो सकते हैं। मजदूरी, कार्य के घंटे, कार्य की भौतिक दशाएँ, कल्याण कारी सुविधाएँ सामाजिक सुरक्षा इत्यादि।

औद्योगिक संबंध में संघर्ष का तत्व अनिवार्यतः निहित रहता है। नियोजक अधिक से अधिक लाभ अर्जित करना चाहते हैं तो दूसरी ओर श्रमिक अधिक से अधिक मजदूरी, कार्य की अच्छी दशाएँ तथा अन्य सुख-सुविधाएँ चाहते हैं। स्पष्ट होता है कि औद्योगिक संबंध और संघर्ष में तनाव के बाद परिणाम सुखद होना चाहिए। संघर्ष के पहलू के घातक परिणाम होते हैं। कभी-कभी औद्योगिक कार्यवाहियाँ इतनी व्यापक होती हैं कि समस्त समुदाय या समाज का जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है।

Scanned with CamScanner